

वर्ष - 2024-25



अंक - 01

बढ़ते कदम

पूर्व रेलवे, मालदा मंडल की सृजनात्मक हिन्दी ई-पत्रिका



होली विशेषांक

संदेश



हिन्दी हमारी राजभाषा है और सरकारी एवं गैर सरकारी कार्यालयों में इसके प्रयोग की उत्तरोत्तर वृद्धि के लिए अनेक प्रोत्साहन योजनाएँ लागू की गयी हैं। इन्हीं योजनाओं में हिन्दी में नये-नये रचनाओं के सृजन एवं रचनाकारों को प्रोत्साहित एवं सम्मानित करने के क्रम में मालदा मंडल के राजभाषा विभाग द्वारा ‘‘बढ़ते कदम’’ ई-पत्रिका का प्रकाशन अर्द्धवार्षिक रूप में किया जा रहा है।

रचनाएँ हमारे समाज की दर्पण होती हैं जिसमें हमें समाज में होने वाले वर्तमान परिवर्तनों एवं घटनाओं का आभास मिलता है। इस प्रकार की रचनाएँ कालांतरित होती हैं और हमारे समाज एवं व्यक्तित्व को विभिन्न प्रकार से प्रभावित करती हैं। इसी प्रकार ‘‘बढ़ते कदम’’ पत्रिका भी मालदा मंडल में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिन्दी में नये-नये रचनाएँ करने की दिशा में एक उत्प्रेरक का कार्य करेगी और हिन्दी में कार्य करने को बल प्रदान करेगी।

पत्रिका प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई।

(मनीष कुमार गुप्ता)

मंडल रेल प्रबंधक
पूर्व रेलवे, मालदा

संदेश



यह जानकर हर्ष हुआ कि मालदा मंडल के राजभाषा विभाग द्वारा ‘‘ई-पत्रिका’’ बढ़ते कदम का नवीनतम अंक प्रकाशित हो रहा है। हिंदी के प्रयोग-प्रसार की दिशा में यह एक अभिनव प्रयास है। समय की भी यही पुकार है।

हम परंपरागत शिथिल एवं बोझिल प्रणाली की जगह नेट पर उपलब्ध पत्रिका को सहज रूप से देखकर एवं पढ़कर उसका तत्काल एवं तत्समय लाभ उठा सकते हैं। हिंदी के प्रयोग-प्रसार में यह एक उपयोगी साधन सिद्ध होगा। यह अभिनव प्रयास हिंदी के प्रयोग-प्रसार में निश्चित रूप से मील का पत्थर साबित होगा।

इस पत्रिका में रेल कर्मियों की रचनाएं समाहित की गई हैं। साथ ही राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की गतिविधियों को भी छायाचित्र के रूप में स्थान दिया गया है।

इस पत्रिका होली विशेषांक अंक के सफल प्रस्तुति के लिए मैं हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ और कामना करता हूँ कि भविष्य में भी अविराम ‘‘बढ़ते कदम’’ ई-पत्रिका प्रकाशित होती रहेगी।

होली की हार्दिक शुभकामनाएं।

(शिव कुमार प्रसाद)

अपर मंडल रेल प्रबंधक व
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी
पूर्व रेलवे, मालदा

संदेश



“बढ़ते कदम” ई-पत्रिका का नवीनतम अंक प्रबुद्ध पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत आनंद की अनुभूति हो रही है। “बढ़ते कदम” के इस अंक में मालदा मंडल के रचनाकारों की साहित्यिक रचनाओं और राजभाषा विभाग की

गतिविधियों को शामिल किया गया है। राजभाषा हिंदी की प्रगति में मालदा मंडल का उल्लेखनीय योगदान रहे, इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए हमने इस अंक की सामग्री विविधतापूर्ण संग्रहित करने का प्रयास किया है। इस होली अंक में रेल कार्मिकों और उनके परिवारजनों की रचनाओं को सम्मिलित किया गया है। हमने इस अंक को रोचक, पठनीय और उपयोगी बनाने का हर संभव प्रयास किया है। उम्मीद है कि सभी लेख और अन्य रचनाएं, सामग्री आपको अवश्य पसंद आएगी।

मालदा मंडल में परिचालन, परियोजना और ग्राहक संतुष्टि कार्यों के साथ-साथ हिंदी के प्रसार में भी अग्रणी भूमिका निभाते हुए हिंदी की गतिविधियां बड़े उत्साह की साथ कार्यान्वित की जा रही हैं। इसके साथ उत्तरोत्तर प्रगति करते हुए “बढ़ते कदम” ई-पत्रिका का प्रकाशन भी एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

“बढ़ते कदम” आपकी अपनी ई-पत्रिका है। सभी पाठकों से हमारा आग्रह है कि इस पत्रिका में प्रकाशित लेख, रचनाओं अन्य सामग्री आदि के बारे में अपनी टिप्पणियां एवं प्रतिक्रियाओं से हमें अवश्य अवगत कराएं।

होली की शुभकामनाओं सहित।

आयुष

(आयुष बेहेरा)

राजभाषा अधिकारी (प्रभारी)
व सहायक बिजली इंजीनियर
पूर्व रेलवे, मालदा

विषय सूची

क्र०	शीर्षक	पेज नं०
1.	होली	5
2.	मेरे बचपन की होली	6-7
3.	मुलहठी	8
4.	पेंसिल की कहानी	9-10
5.	अमर प्रेम का साक्षी मांडू	11-12
6.	कार्तिक पूर्णिमा	13-14
7.	चुटकुले	15
8.	श्रापित रावण	16-18
9.	विविताओं की होली	19-20
10.	लम्हें	21
11.	मेहनत का फल (कविता)	22
12.	मालदा मंडल (कविता)	22
13.	गतिविधियाँ (छाया चित्र)	23-24

पत्राचार का पता

संपादक, बढ़ते कदम

राजभाषा विभाग,

मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय,

द्वितीय तल, पूर्व रेलवे मालदा - 732102

मेल-rajbhasha.malda@gmail.com

रेलवे दूरभाष : 72190

अपनी रचना ई-मेल के माध्यम से भी भेज सकते हैं।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकार के अपने हैं। इसके लिए संपादक मंडल किसी भी प्रकार से जिम्मेदार नहीं होगा।

होली

होली, जिसे रंगों का त्योहार भी कहते हैं, भारत के लोकप्रिय त्योहारों में से एक है। होली हिंदू माह फाल्गुन की पूर्णिमा को मनाई जाती है, जो आमतौर पर मार्च में पड़ती है। यह त्योहार वसंत ऋतु के आगमन और नई शुरुआत का प्रतीक है। यह त्योहार हिंदू धर्म की विभिन्न कथाओं से जुड़ा हुआ है, जो अच्छाई की बुराई पर विजय को दर्शाती हैं।

होली से जुड़ी सबसे प्रसिद्ध कहानियों में से एक होलिका की कथा है, जो राक्षस राजा हिरण्यकश्यप की बहन थी। हिरण्यकश्यप एक शक्तिशाली राजा था जो चाहता था कि सभी उसकी पूजा करें, न कि देवताओं की।

उसका पुत्र प्रह्लाद भगवान विष्णु का भक्त था। हिरण्यकश्यप को यह पसंद नहीं था कि प्रह्लाद भगवान विष्णु की भक्ति करे। उसने प्रह्लाद को दंड देने का फैसला किया। हिरण्यकश्यप ने अपनी बहन होलिका से कहा कि वह प्रह्लाद को गोद में लेकर आग में बैठे। होलिका को आग से न जलने का वरदान प्राप्त था।

लेकिन भगवान विष्णु ने प्रह्लाद की रक्षा की, जबकि होलिका अपने बुरे इरादों के कारण स्वयं जलकर भस्म हो गई। होली पर जलाए जाने वाले होलिका दहन की अग्नि बुराई के नाश और अच्छाई की जीत का प्रतीक है।

प्राचीन काल के संस्कृत साहित्य में होली के अनेक रूपों का विस्तृत वर्णन है। श्रीमद्भागवत महापुराण में रसों के समूह रस का वर्णन है। अन्य रचनाओं में 'रंग' नामक उत्सव का वर्णन है जिनमें हर्ष की प्रियदर्शिका व रत्नावली, तथा कालिदास की कुमारसंभवम् तथा मालविकाग्निमित्रम् शामिल हैं। कालिदास रचित ऋतुसंहार में पूरा एक सर्ग ही 'बसन्तोत्सव' को अर्पित है। भारवि, माघ और अन्य कई संस्कृत कवियों ने बसन्त की खूब चर्चा की है। चंद बरदाई द्वारा रचित हिंदी के पहले महाकाव्य पृथ्वीराज रासो में होली का वर्णन है। भक्तिकाल और रीतिकाल के हिन्दी साहित्य में होली और फाल्गुन माह का विशिष्ट महत्व रहा है। आदिकालीन कवि विद्यापति से लेकर भक्तिकालीन सूरदास, रहीम, रसखान, पद्माकरखख, जायसी, मीराबाई, कबीर और रीतिकालीन बिहारी, केशव, घनानंद आदि अनेक कवियों का यह विषय प्रिय रहा है।

होली की शुभकामनाओं सहित।

राजभाषा विभाग, मालदा

संरक्षक
मनीष कुमार गुप्ता
मंडल रेल प्रबंधक

प्रधान संपादक
शिव कुमार प्रसाद
अपर मंडल रेल प्रबंधक व
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादक
आयुष बेहेरा
राजभाषा अधिकारी व
सहायक मंडल बिजली इंजीनियर

मेरे बचपन की होली

दोस्तों, आज होली का त्यौहार है, सारे मतभेद भूलकर, सभी धर्मों, जाति-पाती से ऊपर उठकर मानवता को महत्व देते हैं। होली हमारे जीवन को रंग-बिरंगी कर देती है। लेकिन यह वर्तमान का जो हमारा भारत है, ये दिन व दिन पाश्चात्य सभ्यताओं का शिकार होते जा रही है। जिसे आज की पीढ़ी इसे विकसित बोलते हैं यह हमारे सभ्यता, संस्कृति और कला पर सीधा प्रहार है, जिससे हमारे समाज की नैतिकता विलुप्त होने के कगार पर है!

दोस्तों, आज की होली ने मुझे बचपन के वह बीते हुए होली को याद दिला दिया। मैं जब प्राथमिक विद्यालय के द्वितीय वर्ग में पढ़ता था तो गुरुजी होली पर लेख लिखने को देते थे और इस पर कहानी सुनाते थे, फिर रात को, वह जिस्ता वाली रुलिंग कॉपी जो 'आज' अखबार से कवर किया होता था, या 'वैशाली' कूटवाली कॉपी में भैया से पूछ कर टूटी भाषा में लिखता था, होली आने के 10 दिन पहले से हम लोग के अंदर हर्ष, उल्लास और उमंग भर जाता था। संध्याबेला में गांव के बड़े, बुजुर्ग और चाचा लोग अपने दिनचर्या को पूरा कर आराम से गांव के पुस्तकालय में पहुंचते थे और वहीं से ढोल-मंजीरे के साथ फगुआ गाकर सारे थकान गमों को भूल जाते थे, उनमें से जो प्रखर थे, वह सबसे पहले फगुआ गीत प्रारंभ करते थे। जिसके कुछ चंद पंक्तियां..... राम खेले होली लक्ष्मण खेले होली, लंका दहन में अवध खेले होली.... और दूसरा गीत.. सदा आनंद रहे घर द्वारे, मोहन खेले होली हो... इसी तरह सारा रा रा... जोगीरा सा रा रा... की गूंज कानों को छेद कर जाते थे। पढ़ाई के समय किताब पर सिर्फ निगाहें होती थी, किंतु सम्पूर्ण आत्मा तो फगुवा को सुनकर मनोरंजित होते रहता था, फिर पिताजी की आहट को महसूस कर, असहजता से पढ़ाई का दिखावा करने लगता। जैसे-जैसे होली नजदीक आता वैसे-वैसे मन में तरंगें उठने लगती। सोचता, कितना जल्दी होली आये। दोस्तों के साथ रंग को पक्का बनाने के लिए केला के थम से सिरिंच द्वारा बोतल में भरना, बगल में छोटकी पहाड़ था और वहाँ जाकर पलाश के फूल को एकत्रित कर लाल रंग बनाने की जो वैज्ञानिक कला थी, अब वह रासायनिक रंगों में कहाँ। कुछ दोस्त ग्रीस का भी जुगाड़ कर लेता था। होलिका-दहन की



तैयारी के लिए भैया लोग भी मीडिया का काम करते थे, किस के खेत का घेरान, टटिया-फड़की सूखा पेड़ पड़ा है, सब बुलेटिन न्यूज़ बना रहता था और रात जग के सब गायब, फिर होलिका दहन होता था। सुबह सम्मत-स्थल पर दोस्तों के साथ पहुँचकर ज्ञान बांटा करते थे, सुबह 08:00 बजे से 12:00 बजे तक कादो-मिट्टी का खेल होता था। वह भी कला स्मरणीय है, अगर भूल से किसी बूढ़े को कीचर पड़ गया तो फिर देखते.. उसके मुँह से जो अमृतवाणी निकलती थी वह भी होली को चार नहीं आठ चांद लगा देती थी, फिर उसी बूढ़े दादा को शाम में पैर पर अबीर-गुलाल रखकर आशीर्वाद लेते थे और दादा भी भावत्मक आशीर्वाद देते थे, यह थी हमारी भारतीय संस्कृति। फिर नए-नए सफेद गंजी, रबड़ वाली पेंट और 02रू० वाली पिचकारी में रंग डालकर एक दूसरे को दौड़ा-दौड़ा कर रंगों से बंदर जैसा मुँह बना देना, एक दो लोग दारू पीकर नाले में भी पड़ा दीखता था। फिर 03-04 बजे कुएं या नल के पास लाइफबॉय साबुन से मुँह का रंग छूड़ाना भी अपनी जिम्मेदारी होती थी। मां दीदी अच्छे पकवान और व्यंजन बनाने में व्यस्त रहती थी, रंगीन हाथों से ही पुआ-पूरी और आलू -कटहल या मटर की सब्जी खाते थे। मन आनंदित हो जाता था। फिर दूसरे दिन अनमने ढंग से स्कूल जाते, फिर वही दिनचर्या चालू।

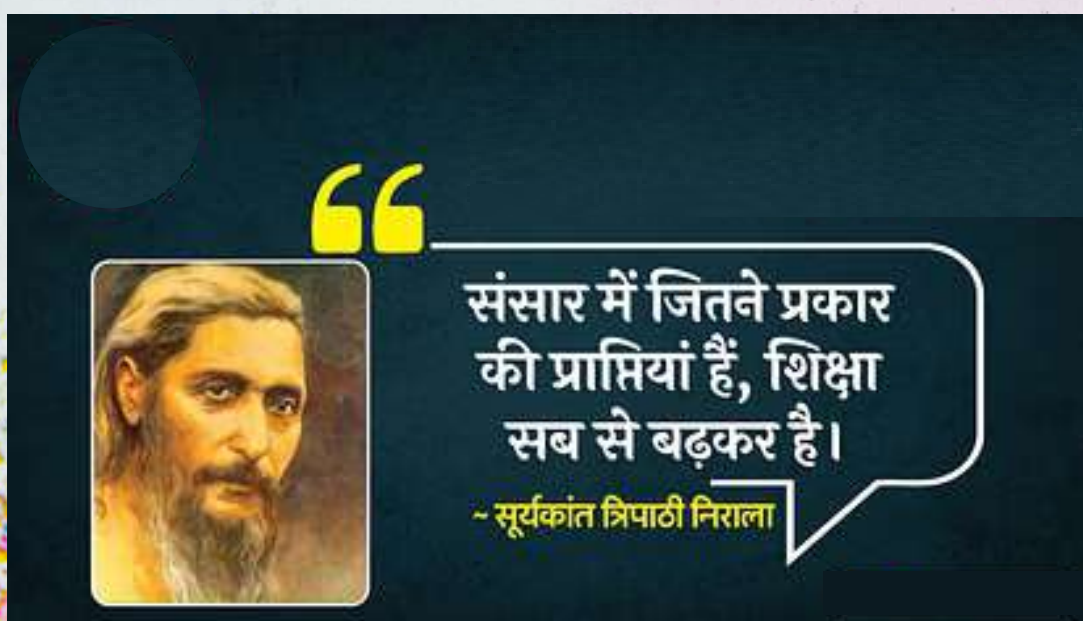
आम का मंजर, सहजन का फूल, पलाश के फूल, खेत खलिहान गेहूं, चना, सरसों से पूरा प्रकृति भाई रंगीन हो जाता। बसंती बयार और बगिया में कोयल की मधुर तान से पता चल जाता की ये फागुन महीना चल रहा है। जब भी उस बीते हुए 'बचपन की होली' को याद करता हूँ तो आज बिल्कुल विरान, सुनसान और बेरंग सी होली पाता हूँ। ना कोई अपनापन, ना भाई-चारा, ना वो मधुर फागुआ की लोकगीत। वो भी एक दौर था, आज भी एक दौर है। ये सभी अब मोबाइल में ही सिमट कर रह गया है। ये पाश्चात्य शैली ने हमारी भारतीय सभ्यता और संस्कृति को दिन व दिन खोखला करती जा रही है। हमें जागरूक होना पड़ेगा एवं अपनी भारतीय सभ्यता और संस्कृति को बचाकर सुन्दर भारत के निर्माण में सहयोग करना होगा, तभी हमारा भारत 'विश्व गुरु' कहलायेगा।

कैसा लगी मेरे बचपन की होली?

- नन्दन कुमार

गाड़ी प्रबंधक

जमालपुर /मालदा /पूर्व रेलवे



मुलहठी

मुलहठी नाम से प्रचलित वृक्ष की जड़ के लंबे टुकड़े का नाम है। इसका उत्पत्ति स्थान अफगान प्रदेश होने के कारण सामान्यतः वहीं की भाषा में 'रब्बुस्सूस' नाम से पुकारते हैं।

असली मुलहठी अन्दर से पीली, रेशेदार व हल्की गंध वाली होती है। ताजी जड़ तो मधुर होती है, पर सूखने पर कुछ तिक्त और अम्ल जैसे स्वाद की हो जाती है। विदेशी आयातित औषधियों में मिश्री मुलहठी को सर्वोत्तम माना गया है। उत्तम मुलहठी में किसी भी प्रकार की तिक्तता नहीं पायी जाती है। यदि मुलहठी को गंधकाम्ल (सल्फ्यूरिक एसिड 80 प्रतिशत वी.वी.) में भिगाया जाए तो वह शेष पीले रंग का हो जाता है। यह पहचान का एक आधार है।

ताजा मुलहठी में 50 प्रतिशत जल होता है, जो सुखाने पर मात्र दस प्रतिशत रह जाता है। इसका प्रधान घटक जिसके कारण यह मीठे स्वाद की होती है, ग्लिसराइजिन होता है जो ग्लिसराइजिक एसिड के रूप में विद्यमान होता है। यह साधारण शक्कर से भी 50 गुना अधिक मीठा होता है। यह संघटक पौधे के उन भागों में नहीं होता जो जमीन के ऊपर होते हैं। ग्लिसराइजिन के अतिरिक्त इसमें आएसो लिक्विटिन, ग्लूकोज, सुक्रोज, रेजी, उड़नशील रसायनिक घटक भी होते हैं।

मुलहठी मुख में डालने पर मुख में विद्यमान लार ग्रंथियों को उत्तेजित कर भोज्य पदार्थों के पाचन में सहायक सिद्ध होता है। मुलहठी का घनसत्व काले या लाल रंग के टुकड़ों में मिलता है।

मूलहठी की विशेषताएं :-

1. मुलेठी मुख, गले, पेट रोग, अल्सर, कफ के रोगों में बहुत उपयोगी है।
2. यह कफ को सरलता से निकलने में मदद करती है। यह दमा में उपयोगी है।
3. मुलेठी चबाने से मुंह में लार का स्राव बढ़ता है। यह आवाज को मधुर बनाती है।
4. यह श्वसन तंत्र संबंधी विकारों, कफ रोगों, गले की खराश, गला बैठ जाना आदि में लाभप्रद है।
5. यह गले में जलन और सूजन को कम करती है।
6. यह पेट में एसिड का स्तर कम करती है।
7. यह जलन और अपच से राहत देती है तथा अल्सर से रक्षा करती है।
8. पेट के घाव, अल्सर, पेट की जलन, अम्लपित्त में मुलेठी बहुत लाभप्रद है। मुलेठी में मौजूद ग्लाइकोपेप्साइड पेट के घाव को भर देती है।
9. अम्लपित्त में इसका सेवन तुरंत ही एसिड को कम करता है।
10. यह कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करती है।
11. यह शरीर की इम्युनिटी बढ़ाती है।
12. यह वीर्य को शुद्ध करती है।
13. यह खून को पतला करती है।
14. इससे कफ, पुरानी खांसी, जुखाम, गले की खराश, सूजन आदि दूर होते हैं।
15. गले के रोग जैसे गले की सूजन, जुखाम, सांस नली में सूजन, मुंह में छाले, गला बैठना आदि में इसका टुकड़ा मुंह में रख कर चूसना चाहिए।
16. हिचकी आने पर मुलेठी का एक टुकड़ा चूसें।



- सुप्रिया राय

पेंसिल की कहानी

पेंसिल, एक साधारण सा दिखने वाला लेकिन शिक्षण कार्य हो या कार्यालय कार्य एक अपरिहार्य साधन है, जो सदियों से लेखन और ड्राइंग की दुनिया को आकार दे रहा है। इसका विकास ग्रेफाइट की खोज से लेकर आधुनिक पेंसिल डिज़ाइन के आविष्कार तक, सदियों के मानवीय खोज और अन्वेषण को दर्शाता है। पेंसिल की यात्रा और इसकी वैज्ञानिक खोज एक आकर्षक कहानी है।

पेंसिल की कहानी 1564 में शुरू होती है, जब इंग्लैंड के कुम्ब्रिया में बोरोडेल के पास ग्रेफाइट का एक विशाल भंडार खोजा गया था। स्थानीय लोगों को जल्दी ही एहसास हो गया कि यह अजीब, मुलायम, काला पदार्थ सतहों को चिह्नित करने और ड्राइंग के लिए एकदम सही है। शुरुआत में इसे सीसा समझ लिया गया, लेकिन बाद में इस खनिज की पहचान शुद्ध ग्रेफाइट के रूप में हुई, जो कार्बन का एक रूप है।

लोगों ने लिखने और चित्र बनाने के लिए ग्रेफाइट की कच्ची छड़ियों का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया, लेकिन यह सामग्री इतनी नरम थी कि इसे अपने आप में प्रभावी ढंग से इस्तेमाल नहीं किया जा सकता था। इसे हल करने के लिए, उपयोगकर्ताओं ने



ग्रेफाइट को स्ट्रिंग या भेड़ की खाल में लपेटा ताकि कुछ संरचना प्रदान की जा सके। हालाँकि यह कार्यात्मक था, लेकिन यह अभी तक वह पेंसिल नहीं थी जिसे हम आज पहचानते हैं। पेंसिल का यह प्रारंभिक रूप आदिम था, लेकिन इसने लेखन उपकरणों के विकास में एक नए युग की शुरुआत की।

जैसे-जैसे लेखन उपकरणों की मांग बढ़ी, यूरोपीय कारीगरों ने ग्रेफाइट को लपेटने के विभिन्न तरीकों के साथ प्रयोग करना शुरू कर दिया, जिससे इसे संभालना और उपयोग करना आसान हो गया। सबसे महत्वपूर्ण प्रगति तब हुई जब कारीगरों ने दो लकड़ी के हिस्सों के बीच ग्रेफाइट रखना शुरू किया और फिर लेखन के एक संकीर्ण हिस्से को उजागर करने के लिए लकड़ी को तराशना शुरू किया। इस शुरुआती विधि ने लकड़ी की पेंसिल को जन्म दिया, जो

स्ट्रिंग में ग्रेफाइट को लपेटने की तुलना में अधिक टिकाऊ और व्यावहारिक समाधान प्रदान करती है।

इस समय के दौरान, अंग्रेजी पेंसिलें बोरोडेल से प्राप्त शुद्ध ग्रेफाइट की वजह से अपनी गुणवत्ता के लिए प्रसिद्ध हो गईं। हालाँकि, यह प्राकृतिक ग्रेफाइट सीमित था, और मांग बढ़ने के कारण यूरोप को जल्द ही कमी का सामना करना पड़ा। इस कमी के समाधान की खोज ने एक महत्वपूर्ण आविष्कार को जन्म दिया जिसने पेंसिल निर्माण को हमेशा के लिए बदल दिया।

पेंसिल के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण छलांग 1795 में आई, जब निकोलस-जैक्स कॉन्टे, एक फ्रांसीसी वैज्ञानिक और अधिकारी ने उत्पादन प्रक्रिया में क्रांति ला दी। नेपोलियन युद्धों के दौरान, फ्रांस को उच्च गुणवत्ता वाले ग्रेफाइट की भारी कमी का सामना करना पड़ा, जिसे मुख्य रूप से इंग्लैंड से आयात किया जाता था। इस समस्या को हल करने के लिए, कॉन्टे ने एक ऐसी विधि विकसित की जिसमें ग्रेफाइट को बारीक पाउडर में पीसकर मिट्टी के साथ मिलाया जाता था। फिर इस मिश्रण को पतली छड़ों में ढाला जाता था और उच्च तापमान पर पकाया जाता था।

इस प्रक्रिया ने न केवल ग्रेफाइट की कमी को हल किया बल्कि कठोरता की अलग-अलग डिग्री वाली पेंसिलों के उत्पादन की भी अनुमति दी। मिट्टी और ग्रेफाइट के अनुपात को समायोजित करके, निर्माता यह नियंत्रित कर सकते थे कि पेंसिल के निशान कितने हल्के या गहरे होंगे। कॉन्टे के आविष्कार ने आधुनिक पेंसिल की नींव रखी, और उनका ग्रेफाइट-मिट्टी का मिश्रण आज भी पेंसिल उत्पादन के लिए मानक है।

डिजिटल तकनीक के उदय के बावजूद, पेंसिल कलाकारों, लेखकों और छात्रों के लिए एक प्रिय उपकरण बनी हुई है। इसकी सादगी और प्रभावशीलता समय की कसौटी पर खरी उतरी है, और कॉन्टे के आविष्कार के मूल सिद्धांत आज भी पेंसिल निर्माण का मार्गदर्शन करते हैं। नरम (बी) से लेकर कठोर (एच) तक कठोरता के विभिन्न ग्रेडों का उपयोग उपयोगकर्ताओं को उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं के लिए सबसे अच्छी पेंसिल चुनने की अनुमति देता है, चाहे वे कोई उत्कृष्ट कृति बना रहे हों या नोट्स ले रहे हों।

बोरोडेल के खेतों से लेकर दुनिया भर की कक्षाओं और स्टूडियो तक, पेंसिल ने मानव इतिहास पर एक अमिट छाप छोड़ी है। यह रचनात्मकता, व्यावहारिकता और सरलता का प्रतीक है। एक ऐसा उपकरण जिसने अनगिनत पीढ़ियों को अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने में सक्षम बनाया है।

- कुमार गौतम
वरिष्ठ अनुवादक, मालदा

अमर प्रेम का साक्षी : मांडू

रानी रूपमती और बादशाह बाज बहादुर के अमर प्रेम का साक्षी है, मध्य प्रदेश स्थित मांडू। यहाँ के खंडहर व इमारतें हमें इतिहास के उस झरोखे के दर्शन कराते हैं, जिसमें हम मांडू के शासकों की विशाल समृद्ध विरासत व शानो-शौकत से रूबरू होते हैं। रानी रूपमती का किला इनके प्यार का साक्षी है। रानी रूपमती को राजा बाज बहादुर इतना प्यार करते थे कि रानी रूपमती के बिना कुछ कहे ही वो उनके दिल की बात को समझ जाते थे। राजा बाज बहादुर और रानी रूपमती के प्यार के साक्षी मांडू में 3500 फीट की ऊंचाई पर बना रानी रूपमती का किला है। कहते हैं कि रानी रूपमती नर्मदा नदी को देखे बिना भोजन ग्रहण नहीं करती थीं। इसलिए राजा बाज बहादुर ने रानी रूपमती की इच्छा का ध्यान रखते हुए रानी रूपमती किले का निर्माण करवाया। रानी रूपमती के किले से नर्मदा नदी नजर



आती है। कहा जाता है कि रानी रूपमती प्रतिदिन स्नान के बाद यहां पहुंचतीं और नर्मदा जी के दर्शन उपरांत अन्न ग्रहण करती थीं। राजा बाज बहादुर रानी रूपमती को बेहद ही प्यार करते थे शायद इसलिए रानी रूपमती के महल तक पहुंचने से पहले राजा बाज बहादुर के महल को पार करना होता था। राजा बाज बहादुर रानी रूपमती की रक्षा के लिए यह सब करते थे। इसलिए शायद आज भी रानी रूपमती के किले को राजा बाज बहादुर और रानी रूपमती की प्रेम कहानी का प्रतीक समझा जाता है।

रानी रूपमती-बाज बहादुर एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक प्रेमकथा है। रूपमती को सुल्तान बाज बहादुर काफी प्रेम करते थे। यह अंतर्धार्मिक विवाह था। इनकी प्रेम कहानी युद्ध, प्रेम, संगीत और कविता का अद्भुत सम्मिश्रण है। बाज बहादुर मांडू के अंतिम स्वतंत्र शासक थे। रूपमती सारंगपुर गांव के किसान की पुत्री और दक्ष गायिका थी। एक दिन बेहद खूबसूरत एक लड़की अपनी सहेलियों के साथ मस्ती में झूमते गाते हुए जा रही थी, तभी वहां से शिकार पर निकले राजपुरुष ने किसान की युवा बेटी की सुरीली तान सुन ली। वह इस अप्रतिम खूबसूरती और सुरीली आवाज का दिवाना हो गया। यह युवा और कोई नहीं मालवा का सुल्तान था बाज बहादुर, जिसकी राजधानी मांडू थी। बाज बहादुर ने इस युवती रूपमती के सामने शादी का प्रस्ताव रखा और मांडू चलने का आग्रह किया तो वह सहमत हो

गई। दोनों ने हिंदू और मुस्लिम रीति से विवाह किया, क्योंकि बाज बहादुर मुस्लिम थे और रूपमती हिंदू थी। मांडू उस समय मालवा की राजधानी थी। बाजबहादुर ने यहां पर रानी रूपमती का खूबसूरत महल का निर्माण 16 वीं शताब्दी में करवाया था। रूपमती के इस महल में रेवा कुंड का निर्माण भी किया गया था। रूपमती अपने इसी महल से नर्मदा के दर्शन करती थी। संगीत प्रेमी नवाब बाजबहादुर रानी रूपमती के सौंदर्य और उसकी सुरीली तान में खोया हुआ रहता था। रूपमती की खूबसूरती के किस्से चारों ओर फैल रहे थे। रूपमती की खूबसूरती के किस्से सुनकर अकबर के सेनापति अधम खान ने उसे हासिल करने के लिए वर्ष 1561 में मांडू पर हमला कर दिया। उनकी यह प्रेम कहानी जल्दी ही खत्म हो गई, जब मुगल सम्राट अकबर ने मांडू पर चढ़ाई करने के लिए अधम खान को भेजा। बाज बहादुर ने अपनी छोटी-सी सेना के साथ उसका मुकाबला किया किंतु हल्के प्रतिरोध के बाद नवाब बाजबहादुर की सेना अधम खान के सामने टिक नहीं सकी। बाज बहादुर सहायता मांगने के लिए चित्तौड़गढ़ भाग गया। लेकिन रूपमती महल में ही रह गई। अधम खान रानी रूपमती के सौंदर्य पर मर-मिटा, इससे पूर्व कि वह मांडू के साथ रूपमती को भी अपने कब्जे में लेता, रानी रूपमती ने विष सेवन करके मौत को गले लगा लिया और आबरू के लिए जान दे दी। इसके बाद अधम खान हाथ मलता रह गया। इस तरह रानी रूपमती और बाज बहादुर की एक प्रेम कहानी का दुखद अंत हो गया। लेकिन मांडू में खड़े ऐतिहासिक महल आज भी उस सच्ची प्रेम कहानी की गवाही दे रहे हैं।

- विनय कुमार झा

जो तुम आ जाते एक बार !
हँस उठते पल में आर्द्र नयन
घुल जाता ओठों से विषाद
छा जाता जीवन में वसंत
लुट जाता चिर-संचित विराग
आँखें देतीं सर्वस्व वार
जो तुम आ जाते एक बार !



महादेवी वर्मा

कार्तिक पूर्णिमा

हिंदू धर्म में पूर्णिमा का व्रत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। प्रत्येक वर्ष 12 पूर्णिमाएं होती हैं। जब अधिकमास या मलमास आता है तब इनकी संख्या बढ़कर 13 हो जाती है। कार्तिक पूर्णिमा को त्रिपुरी पूर्णिमा या गंगा स्नान के नाम से भी जाना जाता है। इस पूर्णिमा को त्रिपुरी पूर्णिमा की संज्ञा इसलिए दी गई है क्योंकि इस दिन ही भगवान भोलेनाथ ने त्रिपुरासुर नामक महाभयानक असुर का अंत किया था और वे त्रिपुरारी के रूप में पूजित हुए थे। ऐसी मान्यता है कि इस दिन भगवान भोलेनाथ के दर्शन करने से सात जन्म तक व्यक्ति ज्ञानी और धनवान होता है। कार्तिक पूर्णिमा के दिन गंगा स्नान, दीप दान, हवन, यज्ञ आदि करने से सांसारिक पाप और ताप का शमन होता है। इस दिन किये जाने वाले अन्न, धन एवं वस्त्र दान का भी बहुत महत्व बताया गया है। इस दिन जो भी दान किया जाता है उसका कई गुणा लाभ मिलता है। मान्यता यह भी है कि इस दिन व्यक्ति जो कुछ दान करता है वह उसके लिए स्वर्ग में संरक्षित रहता है जो मृत्यु लोक त्यागने के बाद स्वर्ग में उसे पुनः प्राप्त होता है।

इस दिन चन्द्र जब आकाश में उदित हो रहा हो उस समय शिवा, संभूति, संतति, प्रीति, अनुसूया और क्षमा इन छः कृतिकाओं का पूजन करने से शिव जी की प्रसन्नता प्राप्त होती है। इस दिन गंगा नदी में स्नान करने से भी पूरे वर्ष स्नान करने का फल मिलता है।

इसी दिन भगवान विष्णु ने प्रलय काल में वेदों की रक्षा के लिए तथा सृष्टि को बचाने के लिए मत्स्य अवतार धारण किया था।

महाभारत काल में हुए 18 दिनों के विनाशकारी युद्ध में योद्धाओं और सगे संबंधियों को देखकर जब युधिष्ठिर कुछ विचलित हुए तो भगवान श्री कृष्ण पांडवों के साथ गढ़ खादर के विशाल रेतीले मैदान पर आए। कार्तिक शुक्ल अष्टमी को पांडवों ने स्नान किया और कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी तक गंगा किनारे यज्ञ किया। इसके बाद रात में दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए अर्पित की। इसलिए इस दिन रूप से गढ़मुक्तेश्वर तीर्थ का विशेष महत्व है।

कार्तिक पूर्णिमा को कृष्ण ने श्री राधा का पूजन सभी ब्रह्मांडों से परे जो दिन राधा उत्सव मनाया जाता



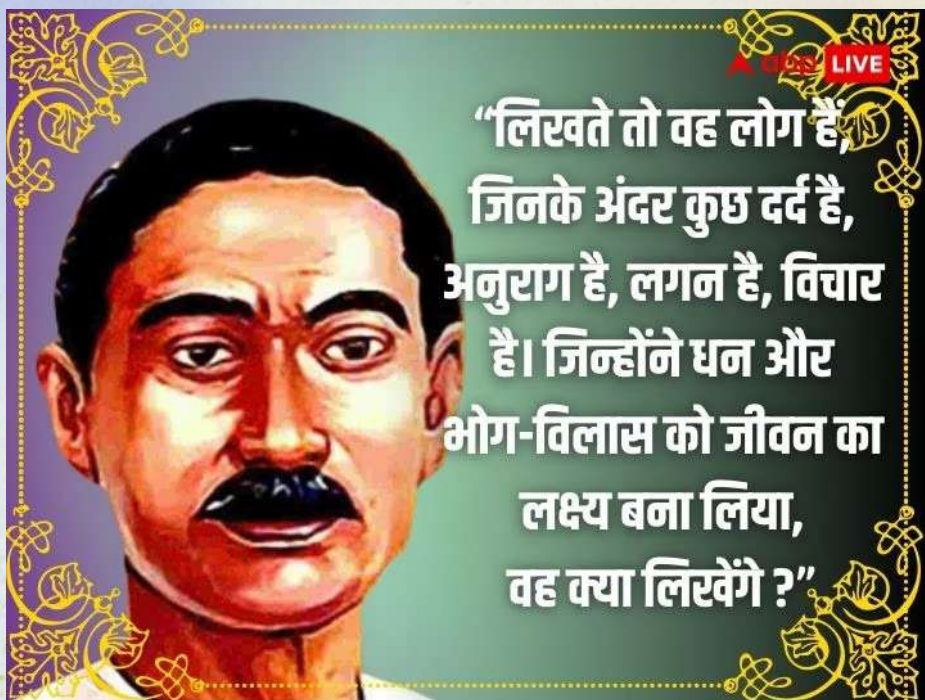
दीपदान करते हुए श्रद्धांजलि गंगा स्नान का और विशेष नगरी में आकर स्नान करने

गोलोक के रासमण्डल में श्री किया था। हमारे तथा अन्य सर्वोच्च गोलोक है वहां इस है तथा रासमण्डल का

आयोजन होता है। कार्तिक पूर्णिमा को श्री हरि के बैकुण्ठ धाम में देवी तुलसी का मंगलमय प्रकाट्य हुआ था। कार्तिक पूर्णिमा को ही देवी तुलसी ने पृथ्वी पर जन्म ग्रहण किया था। कार्तिक पूर्णिमा को राधिका जी की शुभ प्रतिमा का दर्शन और वन्दन करके मनुष्य जन्म के बंधन से मुक्त हो जाता है। इस दिन बैकुण्ठ के स्वामी श्री हरि को तुलसी पत्र अर्पण करते हैं। कार्तिक मास में विशेषतः राधा और श्रीकृष्ण का पूजन करना चाहिए।

जो व्यक्ति कार्तिक माह में तुलसी वृक्ष के नीचे राधा और श्रीकृष्ण की मूर्ति का पूजन निष्काम भाव से करते हैं उन्हें जीवनमुक्त समझना चाहिए। तुलसी के अभाव में आंवलों के नीचे पूजन करनी चाहिए। कार्तिक मास में पराये अन्न, गाजर, दाल, चावल, मूली, बैंगन, घीया, तेल लगाना, तेल खाना, मदिरा, कांजी का त्याग करना चाहिए। कार्तिक मास में अन्न का दान अवश्य करें। कार्तिक पूर्णिमा को बहुत अधिक मान्यता मिली है। इस पूर्णिमा को महाकार्तिकी भी कहा गया है। यदि इस पूर्णिमा के दिन भरणी नक्षत्र हो तो इसका महत्व और भी बढ़ जाता है। अगर रोहिणी नक्षत्र हो तो इस पूर्णिमा का महत्व कई गुणा बढ़ जाता है। इस दिन कृतिका नक्षत्र पर चन्द्रमा और बृहस्पति हों तो यह महापूर्णिमा कहलाती है। कृतिका नक्षत्र पर चन्द्रमा और विशाखा पर सूर्य हो तो पद्मक योग बनता है जिसमें गंगा स्नान करने से पुष्कर से भी अधिक उत्तम फल की प्राप्ति होती है।

- अमन सागर



टीचर : जब कोई विशाल प्रागैतिहासिक जीव सो रहा हो तो उसे क्या कहते हैं ।

बच्चा : डायनोसोर !

टीचर : क्यूबा में कौन सी भाषा बोली जाती है?

बच्चा : क्यूबिक

● ● ● ● ●

बॉस : तुम कहां पैदा हुए थे?

नौकर : भारत में ।

बॉस : कौन से हिस्सा?

नौकर : किस हिस्सा का क्या मतलब?

पूरा शरीर भारत में पैदा हुआ था ।

● ● ● ● ●

साक्षात्कार लेने वाला : तुम्हारे जन्म की तारीख क्या है?

उम्मीदवार : 13 अक्टूबर ।

साक्षात्कार लेने वाला : किस साल?

उम्मीदवार : हर साल ।

● ● ● ● ●

संता : बीवी से झगड़ा खत्म हुआ क्या?

बंता : घुटनों पर चलकर आई थी मेरे पास ।

संता : क्या बोली?

बंता : बोली पलंग के नीचे से निकल आओ,
अब नहीं मारूंगी।

● ● ● ● ●

एक दिन अकबर बादशाह किसी खास मसले पर बीरबल से बातें कर रहे थे। अचानक बीरबल के बहुत रोकने पर पर भी उनकी छींक निकल पड़ी।

बादशाह ने कहा - “बीरबल तुम बड़े बेवकूफ हो।”

बीरबल ने हौले से उत्तर दिया - “जी जहाँपनाह, पर में आपसे बड़ा कभी न हो सकूंगा।”

● ● ● ● ●

बाबा : बच्चा, तुझे स्वर्ग मिलेगा।

लड़का : स्वर्ग।

बाबा : आओं और कुछ दक्षिणा दे जाओ।

लड़का : ठीक है जाओ दक्षिणा में मैंने आपको बम्बेद्य दिया।

आज से मुंबई आपका हुआ साधू (गुस्से में) : मुंबई क्या तेरी है ? जो मुझे दे रहा है।

लड़का : तो क्या स्वर्ग तेरे बाप ने खरीद रखा है ???

जो तू यहाँ आकर स्वर्ग के प्लॉट बांट रहा है।

● ● ● ● ●

पति : तुम्हारे साथ शादी करके मुझे 1 फायदा तो हुआ है!!

पत्नी (खुश होते हुए) : कौन सा फायदा ??

पति : मुझे मेरे गुनाहों की सज़ा इसी दुनिया में ही मिल गयी!!!

● ● ● ● ●

- सुनंदा चौधरी

श्रापित रावण

रावण लंका का पौराणिक बहुसिर वाला राक्षस राजा था। दस सिर और बीस भुजाओं वाला रावण अपनी इच्छानुसार कोई भी रूप धारण कर सकता था। बुराई के सार का प्रतिनिधित्व करते हुए, उसने भगवान विष्णु के सातवें अवतार, मर्यादा पुरूषोत्तम राम के खिलाफ युद्ध लड़ा और अंततः हार गया।

रावण एक भयानक राक्षस था जो सभी राक्षसों का राजा था और लंका (आधुनिक श्रीलंका) के किले द्वीप का राजा था। उनके पिता विश्रवा (प्रजापति के एक निर्माता पुलस्त्य के पुत्र) और उनकी माँ निकासा भी एक राक्षस थीं और नरभक्षी राक्षसों, पिसिटासना की माँ थीं। रावण ने अपने सौतेले भाई कुबेर, धन के देवता को द्वीप से निष्कासित करके गलत तरीकों से अपना सिंहासन हासिल किया। रावण के कई बेटे थे, जिनमें से एक अक्सा था, जिसके तीन सिर थे, जो बुखार के तीन चरणों (गर्मी, सर्दी और पसीना) का प्रतीक था, और इंद्रजीत (उर्फ मेघनाद), जो खुद को अदृश्य कर सकता था।

रावण अपने दस सिर (इसलिए उसे दसकांठ और पंकटिग्रीव के नाम से भी जाना जाता है) और बीस भुजाओं के साथ एक विकराल रूप में दिखाई देता था। उसका शरीर देवताओं के साथ अंतहीन युद्धों में जीते गए घावों से ढका हुआ था। विशेष रूप से तीन घाव विष्णु के चक्र, इंद्र के वज्र और इंद्र के हाथी ऐरावत के दांत से थे। महान देवता ब्रह्मा के प्रति अपनी भक्ति और तपस्या के माध्यम से, रावण अजेय बन गया था और उसके पास वह रूप धारण करने की शक्ति थी जो वह चाहता था, मनुष्य से लेकर पहाड़ और यहाँ तक कि मृत्यु तक। वह इतना शक्तिशाली था कि वह भूकंप और तूफान पैदा कर सकता था। हालाँकि, यह भविष्यवाणी की गई थी कि रावण का अंत एक महिला की वजह से होगा, और ऐसा ही हुआ।

कई वरदानों की वजह से रावण ने अपनी आयु एक हजार साल से अधिक कर ली थी और मौत भी उसका आसानी से कुछ नहीं बिगाड़ सकती थी। एक तरह से रावण अमरता हासिल कर चुका था, लेकिन उसने इतने पाप किए थे, जिसकी वजह से कई लोगों ने उसे श्राप दिया। हालाँकि उसे सजा देना आम इंसान के बस की बात नहीं थी। यही वजह है कि रावण के अंत के लिए भगवान विष्णु को खुद राम के रूप में धरती पर जन्म लेना पड़ा।

लेकिन बहुत ही कम लोग जानते हैं कि केवल सीता के अपहरण की वजह से ही रावण का अंत नहीं हुआ था। बल्कि इसके पीछे उस पर लगे छह श्राप भी थे।

रावण को उसकी बहू रंभा ने श्राप दिया था। रंभा स्वर्ग की एक अप्सरा थी। ऐसा कहा जाता है कि रावण की मुलाकात रंभा से स्वर्ग की यात्रा के दौरान हुई थी। वह उसकी ओर आकर्षित हुआ और उसे हासिल करने के लिए

रावण ने उसे पकड़ लिया। रंभा ने रावण को चेताया कि वह उसे ना छुए क्योंकि वो उसके बड़े भाई कुबेर के पुत्र नलकुबेर की पत्नी बनने जा रही है। रावण को उसे अपनी बहू के रूप में देखना चाहिए और उसका सम्मान करना चाहिए लेकिन वो रावण ठहरा, किसी की बात मानना उसके अहंकार को चोट पहुंचाता इसलिए रंभा की चेतावनी के बावजूद रावण ने उसकी बात नहीं मानी। जब नलकुबेर को इस घटना के बारे में पता चला तो उन्होंने क्रोधित होकर रावण को श्राप दे दिया कि अगर उसने कभी किसी महिला को उसकी इच्छा के विरुद्ध छूने की कोशिश की तो उसका सिर 100 टुकड़ों में बंट जाएगा।

शूर्पनखा के पति विद्युतजिन थे, जो कालके राजा की सेना में सेनापति थे। रावण पूरे विश्व को जीतना चाहता था और अपनी इस ख्वाहिश के लिए उसने कालके राजा के साथ भी युद्ध किया जिस दौरान विद्युतजिन की मौत हो गई। शूर्पनखा ने इस युद्ध में अपने पति को खो दिया जिसके बाद उसने अपने भाई रावण को श्राप दिया कि वो खुद एक दिन रावण की मृत्यु का कारण बनेगी। आगे चलकर वनवास के दौरान शूर्पनखा ने भगवान राम के छोटे भाई लक्ष्मण के सामने शादी का प्रस्ताव रखा लेकिन लक्ष्मण ने इनकार कर दिया जिस पर शूर्पनखा ने लक्ष्मण को सीता को मारने की धमकी दी। इस धमकी को सुन लक्ष्मण ने शूर्पनखा की नाक काट दी। इसके बाद वो क्रोधित होकर रावण के पास गई तब रावण ने अपनी बहन को आश्वासन दिया कि वो उसके इस अपमान का बदला लेकर रहेगा। रावण ने उसके बाद सीता का अपहरण किया। ऐसा माना जाता है कि शूर्पनखा ने रावण से अपने पति के वध का बदला लेने के लिए ये सब किया था, हालांकि इसके कोई साक्ष्य नहीं मिलते हैं।



एक बार रावण भगवान शिव से मिलने कैलाश पर्वत गया।

रावण भगवान शिव का परम भक्त था। लेकिन कैलाश में वो शिव के रक्षक नंदी बैल का उपहास करने लगा। नंदी



कोई सामान्य बैल नहीं था बल्कि उसके पास कई शक्तियाँ थीं। इसके बाद नंदी ने क्रोध में आकर रावण को श्राप दिया कि रावण की मृत्यु का कारण एक वानर बनेगा और उसकी लंका का सर्वनाश करेगा जो बात बिल्कुल सच हुई। वानर रूप में भगवान हनुमान ने लंका में आग लगा दी और उन्होंने रावण के खिलाफ युद्ध लड़ने में भगवान राम की सहायता की।

रघुवंश वंश में एक प्रतापी राजा था जिसे अनारनय के नाम से जाना जाता था। रावण पूरे विश्व को जीतना चाहता था, जिसकी शुरुआत करने पर सबसे पहले उसका युद्ध राजा अनारनय से हुआ। उनके बीच लंबे वक्त तक भयंकर युद्ध चला। हालांकि राजा अनारनय ने इस युद्ध में अपनी जान गंवा दी लेकिन उन्होंने मरने से पहले रावण को श्राप दिया कि उसका अंत अनारनय के वंश में जन्म लेने वाले एक व्यक्ति द्वारा किया जाएगा। इसके बाद भगवान राम का अनारनय वंश में जन्म हुआ और उन्होंने रावण का वध किया।

- कृष्णा नंद चौरसिया
कनिष्ठ अनुवादक
मालदा



आप बड़े चिंतित हैं मेरे पिछड़ेपन के माते
आप सोचते हैं कि सीखता यह भी ढंग हमारे
मैं उतारना नहीं चाहता जाहिल अपने बाने
धोती-कुरता बहुत जोर से लिपटाए हूँ याने !

- भवानी प्रसाद मिश्र

विविधताओं का त्योहार होली

होली' शब्द 'होला' से आया है, जिसका अर्थ सर्वशक्तिमान को नैवेद्य चढ़ाना या प्रार्थना करना, धन्यवाद देना और याद दिलाना कि ईश्वर अपने भक्तों का ध्यान रखते हैं और उन्हें जीवन की विपदाओं से बचाते हैं। होली के दिन भक्तजन अपने इष्टदेव को नैवेद्य समर्पित करते हैं। यह दिन स्वार्थ, अभिमान, कामुकता, लोभ, और घृणा के साथ साथ सभी अवाछनीय प्रवृत्तियों, विचारों और व्यवहारों के जलने को भी चिह्नित करता है, इस त्योहार की भावना सामाजिक, सांस्कृतिक, जैविक से लेकर धार्मिक क्षेत्र तक फैली है। यह त्योहार पूरे जोश और आनंद के साथ भारत में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में अलग अलग तरीके से मनाया जाता है।

सर्दी की समाप्ति और बसंत ऋतु के आगमन के बीच वातावरण और शरीर में जीवाणु भयंकर रूप से बढ़ जाते हैं। होलिका दहन से तापमान तुरंत ऊपर चला जाता है। होलिका दहन के समय होलिका की परिक्रमा करते वक्त आग से निकली ऊष्मा शरीर और आसपास के वातावरण के जीवाणुओं को नष्ट कर के उन्हें स्वच्छ कर देती है। इसके अलावा, शरीर में ऊष्मा की कमी के कारण सर्दी से बसंत के संक्रमण की अवधि में लोग उनींदा और थका महसूस करते हैं। होली का उत्सव शरीर के तंत्र का नवीकरण करने का भी पर्व माना जा सकता है।

वैज्ञानिकों का विश्वास है कि जैव गुलाल और अबीर शरीर के रोमकूपों में प्रवेश करके शरीर के आयनों को मजबूत बनाने के साथ साथ मानव-तंत्र को स्वस्थ बनाते हुये उसमें ताकत तथा ओज की वृद्धि करते हैं। रंग शरीर को विविध तरीकों से प्रभावित करते हैं। लाल शुद्धता को ऊर्जामय करता है। हरा ताकत देता है। नीला शांति और संतुलन को प्रोत्साहित करता है। पीला धर्मनिष्ठा की भावना को बढ़ाता है और गुलाबी रिश्तों में प्रागढ़ता को प्रोत्साहित करता है।

होली का त्योहार सर्दी के अंत, फसल कटाई और बसंत ऋतु के आगमन का सूचक है। सामान्यतः इसे 'फगवा' की तरह जाना जाता है। फाल्गुन का महीना भारत में बसंत ऋतु का आरंभ करता है। वह ऋतु जब बीज अंकुरित होते, फूल खलते हैं और देश सर्दी की सुस्ती को पीछे छोड़ तरौताजा होकर जाग जाता है।

होली बिना जाति, संप्रदाय, रंग, नस्ल, हैसियत या लिंग भेद के बुलंद जोश के साथ मनाई जाती है। यह एक अवसर है जब भेदभाव की सभी दीवारों को तोड़ कर एक दूसरे पर गुलाल या रंग फेंका जाता है और देश भर में एक वैश्विक भाईचारे की भावना की अभिपुष्टि होती है।

होली राधा और कृष्ण की कथा का भी उत्सव है जो कृष्ण की उस परम प्रसन्नता का वर्णन करती है जो कृष्ण को राधा और गोपियों को रंग लगाने से मिली थी। कृष्ण का यह नटखटपन बाद में एक चलन बनकर होली के उत्सव का एक हिस्सा बन गया। एक मिथक के अनुसार होली राक्षसी पूतना की मृत्यु का उत्सव भी है, जिसने

जहरीला दूध पिलाकर शिशु कृष्ण को मारने की कोशिश की थी। एक अन्य कथा जो दक्षिण भारत में बहुत लोकप्रिय है वह शिव और कामदेव के बारे में है। दक्षिण में अनुराग के देवता कामदेव के त्याग का उत्सव मनाया जाता है जिन्होंने विश्व को बचने के लिये अपने प्राण ख़तरे में डालकर भगवान शिव का तप भंग किया था ।

प्राचीन काल से अविरल होली मनाने की परंपरा को मुगलों के शासन में भी अवरुद्ध नहीं किया गया बल्कि कुछ मुगल बादशाहों ने तो धूमधाम से होली मनाने में अग्रणी भूमिका का निर्वाह किया। अकबर, हुमायूँ, जहाँगीर, शाहजहाँ और बहादुरशाह ज़फ़र जैसे मुगल शासक होली के आगमन से बहुत पहले ही रंगोत्सव की तैयारियाँ प्रारंभ करवा देते थे। अकबर काल में होली के दिन अकबर के महल में सोने चाँदी के बड़े-बड़े बर्तनों में केवड़े और केसर से युक्त टेसू (पलाश) का रंग घोला जाता था और राजा अपनी बेगम और हरम की सुंदरियों के साथ होली खेलते थे। शाम को महल में उम्दा ठंडाई, मिठाई और पान इलायची से मेहमानों का स्वागत किया जाता था और मुशायरे, कव्वालियों और नृत्य-गानों की महफ़िलें जमती थीं। रंग के साथ स्वादिष्ट व्यंजनों का भी प्रबन्ध होता था ।

कुछ इसी प्रकार का माहौल जहाँगीर और बहादुरशाह ज़फ़र के समय में होली के दिन होता था। होली के अवसर पर आम जनता को भी बादशाह के करीब जाने, उनसे मिलने के अवसर प्राप्त होते थे।

जहाँगीर के समय में महफ़िल-ए-होली का भव्य कार्यक्रम आयोजित होता था। इस अवसर पर राज्य के साधारण नागरिक बादशाह पर रंग डालने के अधिकारी होते थे। शाहजहाँ होली को 'ईद गुलाबी' के रूप में धूमधाम से मनाता था। बहादुरशाह ज़फ़र होली खेलने के बहुत शौकीन थे और होली को लेकर उनकी सरस काव्य रचनाएँ आज तक सराही जाती हैं। मुगल काल में होली के अवसर पर लाल किले के पीछे यमुना नदी के किनारे आम के बाग में होली के मेले लगते थे। मुगल शैली के एक चित्र में औरंगजेब के सेनापति शायस्ता खाँ को होली खेलते हुए दिखाया गया है।

मुस्लिम पर्यटक अलबरूनी ने भी अपने ऐतिहासिक यात्रा संस्मरण में होलिकोत्सव का वर्णन किया है। भारत के अनेक मुस्लिम कवियों ने अपनी रचनाओं में इस बात का उल्लेख किया है कि होलिकोत्सव केवल हिंदू ही नहीं मुसलमान भी मनाते हैं, जो सबसे प्रामाणिक इतिहास की तस्वीरें हैं। अकबर का जोधाबाई के साथ तथा जहाँगीर का नूरजहाँ के साथ होली खेलने का वर्णन मिलता है। मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य में दर्शित कृष्ण की लीलाओं में भी होली का विस्तृत वर्णन मिलता है।

- अजय कुमार साव
कनिष्ठ अनुवादक
मालदा

लम्हें

बीते हुए लम्हों को याद करती हूँ,
 गुजरे हुए लम्हें में खो जाती हूँ।
 कई कहानी ऐसी भी हैं जिसे याद करके,
 बीते पल, बीते लम्हों में खो जाती हूँ ।
 आज भी जिन्दा है वह खुशनुमा लम्हें
 जो याद करती हूँ
 याद आते हैं वह पल वह खुशनुमा लम्हें।
 छु जाते हैं दिल के तार-तार को,
 खुशनुमा वह पल आज भी
 जिन्दा हैं मन के कोने में ।
 खो जाती हूँ आज भी उस पल के लम्हें में,
 जो हमने बचपन में यादों से बिताई थी ।
 छोटे छोटे लम्हें जीवन की धरोहर शाम हमारे
 चलते हर पल संग हमारे
 चलते हर पल की फिजा भर
 सुबह की पहली किरण में उम्मीद की चमक
 शाम की ढलती धुप सुकून की मधुर धड़क
 बचपन की हंसी खिलखिलाते चेहरे
 यादों में बसी वो बातें जो दिल को घेरा
 यौवन की उमंग, सपनों की उड़ान
 हर एक लम्हा जैसा कोई मधुर गान
 प्रेम की प्यारी बातें
 दिल को छु जाने वाली उन लम्हों की मिठास

जो हैं सबसे निराले
 जीवन के सफ़र में हर लम्हा है खास
 ये खजाना न कभी हो नाश
 छोटे छोटे लम्हे बड़े अनमोल होते हैं जीवन के
 ये मीठी हर दिल में बसे होते हैं
 हँसते हुए चेहरे आंसुओं की कहानी
 हर मोड़ पर हमें सिखाती नयी कहानी
 रिश्तों की डोर से बंधे ये लम्हे
 हमें सिखाती हर नए सवरे के साथ नए रस्ते दिखाते
 जीवन का हर मोड़
 एक नई कहानी कहता हर लम्हा में छुपा है
 खुशियों का एक सुनहरा बक्सा
 इन लम्हों का संग बनता है जीवन का संगीत
 हर धड़कन में घुलता है ये अनमोल प्रीत
 छोटे छोटे लम्हें जैसे सितारों की बारात
 इनमे ही छिपा हा साख जीवन का सार
 तो जी ले हर पल के मुश्कुराहट की मिठास से
 वो छोटे छोटे लम्हें बन जाते हैं
 जीवन की सबसे प्यारी आस से।

- मिटु मित्र
 आदेशपाल

कार्यालय अधीक्षक (सा) पूर्व रेलवे , मालदा

मेहनत का फल

बिना मेहनत के कुछ नहीं मिलता,
कठिनाइयों का सामना करो।
संघर्ष से ही मिलती है सफलता,
मेहनत करो, यही है संकल्प ।

जीवन की राहों में है चुनौतियां,
पर जीत वही है जहां है मेहनत।
कामयाबी का सफर है मुश्किल,
पर मेहनत है हर मुश्किल का समाधान।

आसमान को छूने के लिए,
अपने सपनों के पीछे भागो।
हर कठिनाई को अपनाओ।
मेहनत से ही मिलेगा परिणाम सच्चा,

आसमान को छूने के लिए,
अपने सपनों के पीछे भागो।
हर कठिनाई को अपनाओ,
मेहनत से ही मिलेगा परिणाम सच्चा।
मेहनत का फल है मिठा,
सफलता की राह में उसका सहारा।

- रंजन प्रसाद रजक
कार्यालय अधीक्षक
वरि. मंडल विधुत अभियंता/सा/कार्यालय
पूर्व रेलवे मालदा

मालदा मंडल



रेलवे का सफर हर किसी को
लगता है सुहाना
रेलवे में क्या अच्छा हो रहा है
यह बात है हमें बताना।
मालदा मंडल में क्या अच्छा हो
रहा है यह बात है हमें बताना

मंडल में 15 अमृत स्टेशन का निर्माण
अंतिम चरण में है

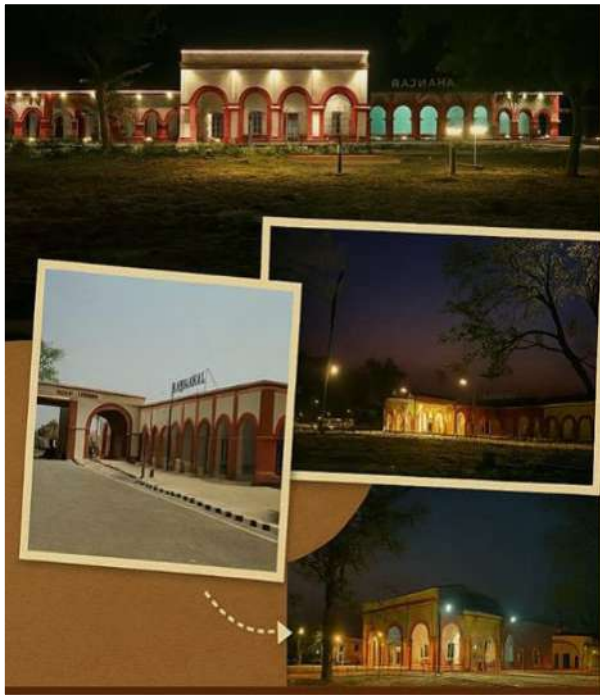
यह खुशखबरी आप सबको है हमें आज बतलाना।
अमृत भारत और वन्दे भारत
ट्रेन से यात्रियों को मिला है
हाई कम्फर्ट और हाई स्पीड का बेहतरीन नजराना।
रेलवे ने लिया है संकल्प
यात्रियों को आराम एवं सुरक्षित
एक शहर से दूसरे शहर तक जल्दी से पहुँचाना ।

- शिव कुमार प्रसाद
अपर मंडल रेल प्रबंधक
पूर्व रेलवे मालदा

राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियां



अमृत भारत योजना के अंतर्गत
मालदा मंडल के राजमहल, पीरपेंती और
मालदा टाउन स्टेशन के पुर्नविकास के दृश्य



राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित
विभिन्न हिन्दी कार्यशालाएँ

